धम्म-सुत्तं
(धर्म-सूत्र)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ : धम्म-सुत्तं (धर्मसूत्र)

मंगल आशीर्वाद : परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य
श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज

ग्रंथकार : परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य
श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

संपादन : आर्यिका वर्धस्वनंदनी

प्राप्ति स्थान : ई-16, सैक्टर-51 नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) 201301
मो. 9971548889, 9867557668

ISBN : 978-93-94199-29-3

संस्करण : द्वितीय 1000 (सन् 2022)

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.) (सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक : ईस्टर्न प्रेस
नारायणा, नई दिल्ली-110028
दूरभाष: 011-47705544
ई-मेल: info@easternpress.in

सम्पादकीय

विज्जारहमारूढो, मणोरहपहेसु भमदि जो चेदा।
सो जिणणाणपहावी, सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो।।

आ. कुंदकुंदस्वामी, समयसार, 7-44-236

जो आत्मा विद्यारूपी रथ में आरूढ़ हुआ मनोरथ मार्ग में भ्रमण करता है, उसे जिनेन्द्र देव के ज्ञान की प्रभावना करने वाला सम्यग्दृष्टि जानना चाहिए।

एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होहि तित्तो, होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं।।

आ. कुंदकुंद स्वामी, समयसार, 7-14-206

हे भव्य! तू इस ज्ञान में सदा प्रीति कर इसी में तू सदा सन्तुष्ट रह, इससे ही तू तृप्त रह। (ज्ञान में रति, सन्तुष्टि और तृप्ति से) तुझे उत्तम सुख होगा।

सम्यक्ज्ञान की निर्मल धारा चेतना के धरातल पर पड़े विषय-कषाय-अघ की धूल को नष्ट करती है। जिस प्रकार मंद सुगंधित जल की वर्षा चित्त में आह्लाद उत्पन्न करती है व साथ ही वृक्षादि को संवर्द्धित, पुष्पित, फलित व पल्लवित करने में समर्थ होती है उसी प्रकार सम्यक्ज्ञान रूपी जल की वर्षा से चेतना आह्लादित होती है, परिणामों में विशुद्धि संवर्द्धित होती है तथा संयम, तपादि उत्पन्न होते हैं। ज्ञान में अनुरक्त व्यक्ति के लिए मोक्षमार्ग अत्यंत सरल प्रतिभासित होता है जबकि तत्त्वज्ञान से विहीन विषादयुक्त दिखाई पड़ता है। ज्ञान की इसी निर्मल धारा में प्रतिपल अवगाहन करने वाले और अन्य भव्य जीवों के लिए भी पुण्यकोष की वृद्धि में निमित्त बनने वाले आचार्य गुरुवर ने कई प्राकृत ग्रंथों की रचना की।

प्राकृत भाषाः- भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। **''प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्''** प्रकृति व स्वभाव से सिद्ध प्राकृत है।

जिस प्रकार मेघ का जल स्वभावतः एकरूप होकर भी नीम, गन्नादि विशेषाधारों से संस्कार को पाकर अनेकरूप में परिणत हो जाता है, उसी

प्रकार स्वाभाविक सबकी बोली प्राकृत भाषा पाणिनि आदि के व्याकरणों से संस्कार को पाकर उत्तरकाल में संस्कृतादि नाम पा लेती है। प्राकृत शब्द स्वयं अपनी स्वाभाविकता एवं व्यवहार-मूलकता को कह रहा है।[1]

अपनी कला, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति की मौलिकता एवं उत्कृष्टता के कारण ही भारत को विश्व-गुरु की संज्ञा प्राप्त हुई। तथा उसकी इस विविधतापूर्ण प्रज्ञा की एक प्रमुख संदेशवाहिका भाषा प्राकृत थी, जो कि अतिप्राचीन काल से वृहत्तर भारत में जन-जन की भाषा बनी रही। विश्व की प्राचीन 'सिन्धु सभ्यता' के लोगों की भाषा 'प्राकृत' थी। जो मृण्मयी मुद्रालेख सिंधु सभ्यता के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं, वे सभी प्राकृत-भाषामय हैं।

इस देश की संस्कृति इस देश की आत्मा के स्वर प्राकृत भाषा में ही मुखरित हुए हैं क्योंकि प्रायः समस्त भारतवासी प्राकृत भाषा-भाषी थे। प्राकृत की महत्ता को बताते हुए कहा है भारतीय संस्कृति एवं इतिहास तब तक अधूरा रहेगा जब तक कि उसका प्राकृत व पालि से संबंध न जोड़ा जाए।[2]

आचार्य श्री के ग्रंथों में शौरसेनी प्राकृत दिखाई पढ़ती है। छठी सदी के प्राकृत-वैयाकरण वररुचि का सूत्रवाक्य **''प्रकृतिः शौरसेनी''।** जिसके अनुसार शौरसेनी प्राकृत सभी प्राकृतों की मूल प्रकृति है। **''प्राकृतमणिदीपकार''** ने तो शेष समस्त प्राकृतों के अधिकांश रूपों के लिए 'शेषं शौरसेनीवत्' कहकर समस्त प्राकृतों की शौरसेनी-मूलकता प्रमाणित कर दी है। स्पष्ट है कि शौरसेनी ही मूल प्राचीन प्राकृत भाषा थी। शूरसेन प्रदेश में विकसित होने के कारण ही नहीं अपितु इसके विशालतम साहित्य व प्राचीनतम् प्रयोगों के कारण 'शौरसेनी' नाम दिया गया। शौरसेनी के लिए कहा है-

1. काव्यालंकार रुद्रट, नमिसाधु 2/22
2. जयशंकर प्रसाद 'कंकाल' उपन्यास

राजपत्न्यादिवक्त्रेन्दु-संवास-हृदयंगमा।
मृदुगंभीर संदर्भा शौरसेनी धिनोतु वः।।
-मार्कण्डेय का दशग्रीववध महाकाव्य

रानी के अंत:पुर में रहने वाली अन्य महिलाओं के मुख रूपी चंद्रमा एवं हृदय कमल में जो भलीभाँति निवास करती है, वह लालित्य व गांभीर्य से युक्त शौरसेनी प्राकृतभाषा तुम सबको प्रसन्न करे।

मृदु व गंभीर ये गुण व विशेषण राजवर्ग से संबंधित हैं। जिस प्रकार अंत:पुर में राजा का प्रवेश प्रसन्नता के लिए होता है उसी प्रकार राजसभा, संगोष्ठी आदि में शौरसेनी का प्रयोग आनंदवर्द्धन के लिए होता है।

प्रस्तुत '**धम्म-सुत्तं**' नामक ग्रंथ गाथा छंद में 120 श्लोकों से अलंकृत है। आचार्य गुरुवर द्वारा रचित यह ग्रंथ भी अनुपम है। इस ग्रंथ में ग्रंथकार ने सरल, सुबोध व प्रसिद्ध प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया है जिससे पाठकगण सरलता से न्याय-नीति-धर्म को समझ सकें व निज जीवन में स्थान दे सकें। इसमें निहित प्रश्नोत्तर बहुत ही रोचक हैं। ग्रंथ का प्रारंभ करने पर पाठक की उत्तरोत्तर जिज्ञासा वृद्धिंगत होती है और इसका कारण है ग्रंथ की रोचकता एवं जीवनोपयोगी व्यवहार पक्ष में काम आने वाले तथ्य। इसमें प्रतिपादित विषय तो अपनी ओर आकर्षित करते हैं जैसे- सकल कार्यकर्त्ता के गुण, लोकप्रिय बनने के लक्षण कभी मत भूलिए, श्रेष्ठ गृह, रामायण से सीख, धर्म चक्रवर्ती के रत्न आदि। प्रश्नोत्तर शैली में एक छंद इस प्रकार है-

कत्थ कस्स य धारेज्ज, संजमो राय-संमुहे णयणेसु।
जुवदि-मज्झे कायम्मि, पयाए संमुहे वयणेसु।।65।।

साहु-अग्गे चित्तम्मि, सिसुणो संमुहे सगभावणासुं।
कम्मुदये कसायेसु, तहेव इंदियजयम्मि सया।।66।।

संयम कहाँ और किसका धारण करना चाहिए? राजा के आगे आँखों पर, युवती के मध्य काया पर, प्रजा के सन्मुख वचनों पर, साधुओं के सामने

चित्त पर, शिशु के सम्मुख स्वभावना पर, कर्मोदय के समय कषायों पर व उसी प्रकार इंद्रिय जय में संयम रखना चाहिए।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज से लेकर सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज तक की गौरवशाली परम्परा का निर्वहन परमपूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज कर रहे हैं और मोक्षमार्ग में श्रम के साथ जिनशासन के संरक्षण व संवर्द्धन में श्रमरत हैं और इसी को चिर जीवंतता प्रदान करने हेतु जिनशासन के अन्य प्रभावक कार्यों के साथ प्राकृत में कई ग्रंथों का लेखन किया।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ही इसका अध्ययन करें। परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्र वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। उन्हें आरोग्य की प्राप्ति हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन।

नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु
जैनम् जयतु शासनम्

-आर्यिका वर्धस्व नंदनी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण.....1
धर्म का स्वरूप.....3
सम्यक् गुरु उपासक कौन?.....4
मानव चिंतित कब होता है.....4
वर्तमान के कल्पवृक्ष.....5
क्षेमंकरी शिक्षा.....6
अशांत मन के हेतु.....7
मन की शांति के उपाय.....8
मूर्ख कौन?.....9
ऐसे बनो, ऐसे नहीं.....10
श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता.....11
अमृत कुंड.....12
धर्म-चक्रवर्ती के रत्न.....12
सज्जनों को अप्रिय.....13
कभी मत भूलिए.....14
क्रोधी कौन नहीं.....15
लोकप्रिय कौन?.....16
गुरु भक्ति का फल.....16
संयम के स्थान.....17
अच्छे समय के लक्षण.....17
आत्मघाती कौन?.....18
क्षुद्र जीव.....19

जागरुकता कब? 19
श्रेष्ठ गृह 20
सुख प्राप्ति 22
मोक्ष के उपाय 23
दु:ख के हेतु 24
रामायण से शिक्षा 24
परस्त्रीगामी 25
पुण्यात्मा की पहचान 25
सुगति का पात्र 26
पंडित कौन 27
भारभूत कौन 27
सारभूत कौन 27
महापापी मनुष्य 28
नरकायु का बंधक 28
मृत्यु नहीं हरती 29
धर्म-शाखा 29
तत्त्वचिंतन के स्तंभ 29
सम्यग्दर्शन के लक्षण 30
ज्ञान वृद्धि के हेतु 30
अंतिम मंगलाचरण 31
प्रशस्ति 32

धम्म-सुत्तं

मंगलाचरण

पुज्जणीया जिणिंदा, सिद्ध-झेया साहूवासणीया।
धम्मो च सेवणीयो, णमामि ता अप्पसिद्धीए।।1।।

अन्वयार्थ-जिणिंदा-जिनेंद्र देव **पुज्जणीया**-पूज्यनीय हैं **सिद्धा**-सिद्ध प्रभु **झेया**-ध्येय (ध्यान के योग्य) है **साहूवासणीया**-साधु उपासनीय हैं **च**-और **धम्मो**-धर्म (सदा) **सेवणीयो**-सेवनीय है **अप्पसिद्धीए**-आत्मा की सिद्धि के लिए **ता**-(मैं) उन्हें **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

केण जिदं कम्मं चिय, काए विहीए तहा के जयंति।
किं होदि फलं तस्स वि, केण लहेदि जीवप्प-सुहं।।2।।

अन्वयार्थ-केण-किसके द्वारा **कम्मं जिदं**-कर्म जीते गए हैं? **काए विहीए**-किस विधि से **तहा**-तथा **के जयंति**-कौन जीतते हैं? **तस्स**-उसका **फलं**-फल **किं**-क्या **होदि**-होता है? **केण**-किससे **जीवप्प-सुहं**-जीव आत्म सुख **लहेदि**-प्राप्त करता है?

भयवेण जिदं कम्मं, रयणत्तयेणं आसण्ण-भव्वा।
फलं सुद्धो सहावो, लहदि जीवप्प-सुहमेदेण।।3।।

अन्वयार्थ-भयवेण-भगवान् के द्वारा **जिदं कम्मं**-कर्म जीते गए **रयणत्तयेणं**-रत्नत्रय के द्वारा (जीते गए हैं) **आसण्ण-भव्वा**-आसन्न भव्य (जीतते हैं) **फलं**-उसका फल **सुद्धो सहावो**-शुद्ध स्वभाव है **एदेण**-इसी के द्वारा **जीवप्प-सुहं**-जीव आत्म सुख को **लहदि**-प्राप्त करता है।

को झेयो को झाऊ, किं झाणं झाण-कारणं खलु।
किं झाण-फलं केणं, कारणेणं सिद्धो झेयो।।4।।

अन्वयार्थ-को-कौन **झेयो**-ध्येय **को**-कौन **झाऊ**-ध्याता है? **किं झाणं**-ध्यान क्या है? **खलु**-निश्चय से **झाण-कारणं**-ध्यान का कारण

(क्या है?) **झाण-फलं**-ध्यान का फल **किं**-क्या (होता है) **केणं कारणेणं**-किस कारण से **सिद्धो**-सिद्ध **झेयो**-ध्येय हैं?

सग-सुद्धप्पा झेयो, तिगुत्ति-जुत्तो हु सव्वदा झादू।
चित्तेकग्गो झाणं, अप्प-विसुद्धीइ सिद्धी तं।।5।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **सग-सुद्धप्पा**-निज शुद्धात्मा **झेयो**-ध्येय है **तिगुत्ति-जुत्तो**-तीन गुप्तियों से युक्त **सव्वदा**-सर्वदा **झादू**-ध्यानकर्त्ता है **चित्तेकग्गो**-चित्त की एकाग्रता **झाणं**-ध्यान है **अप्प-विसुद्धीइ**-आत्म विशुद्धि के लिए (ध्यान किया जाता है) **सिद्धी**-(ध्यान का फल) सिद्धि है **तं**-इसीलिए (ही सिद्ध ध्येय हैं)।

के खलु उवासणीया, होंति लोयम्मि केण कारणेणं।
उवासणाए फलं किं, तहा के उवासगा णिच्चं।।6।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **उवासणीया**-उपासनीय **के**-कौन है? **केण कारणेणं**-किस कारण वे **लोयम्मि**-लोक में **होंति**-(उपासनीय) होते हैं **उवासणाए**-उपासना का **फलं**-फल **किं**-क्या है **तहा**-तथा **णिच्चं**-नित्य **उवासगा**-उपासक **के**-कौन है?

पंचगुरुवासणीया, णिच्चं परम-पदम्मि ठिदा तत्तो।
सगप्पुवलद्धी फलं, सम्माइट्ठी उवासगा य।।7।।

अन्वयार्थ-पंचगुरुवासणीया-पंच गुरु उपासनीय हैं **णिच्चं**-नित्य **परम-पदम्मि**-परम पद में **ठिदा**-स्थित हैं **तत्तो**-इसीलिए (लोक पूज्य हैं) (उपासना का) **फलं**-फल **सगप्पुवलद्धी**-स्वात्मोपलब्धि है **य**-और **सम्माइट्ठी**-सम्यग्दृष्टि **उवासगा**-उपासक हैं।

किं धम्मो जग-पुज्जो, सव्व-जीवेहिं सेवणीयो किं।
को धारिदुं समत्थो, तस्स फलं होदि किं समये।।8।।

अन्वयार्थ-धम्मो-धर्म **जग-पुज्जो**-जग पूज्य **किं**-क्यों है? **कहं**-क्यों **सव्व-जीवेहिं**-सर्व जीवों के द्वारा **सेवणीयो**-सेवन के योग्य है **को**-

कौन (धर्म) **धारिदुं**-धारण करने में **समत्थो**-समर्थ हैं। **समये**-आगम में **तस्स**-उसका **फलं**-फल **किं होदि**-क्या होता है।

पुज्जदाए हेदू य, सासय-सुह-कारणं सेवणीयो।
भव्वो सया समत्थो, भव-सिव-सोक्खं च फलं तस्स।।9।।

अन्वयार्थ-धर्म **पुज्जदाए**-पूज्यता का **हेदू**-हेतु है **सासय-सुह-कारणं**-शाश्वत सुख के कारण **सेवणीयो**-धर्म सेवनीय है **भव्वो**-भव्य (उसे धारण करने में) **सया**-सदा **समत्थो**-समर्थ है **तस्स-फलं**-उसका फल **भव-सिव-सोक्खं च**-संसार और मोक्ष सुख है।

धर्म का स्वरूप

किं धम्मस्स सरूवो, करुणा-भावो दया-जुदकज्जाणि।
सच्चं खमा य विणयो, संजमो संती संतोसो।।10।।

अन्वयार्थ-धम्मस्स-धर्म का **सरूवो**-स्वरूप **किं**-क्या है? (धर्म का स्वरूप) **करुणा-भावो**-करुणा भाव **दया-जुदकज्जाणि**-दया युक्त कार्य **सच्चं**-सत्य **खमा**-क्षमा **विणयो**-विनय **संजमो**-संयम, **संती**-शान्ति **य**-और **संतोसो**-संतोष है।

सीलं वय-मुववासो, जिणभत्ती धम्म-सवणं णियमेण।
मुणि-सेवा वच्छल्लं, चागो तवो गुण-पसंसा य।।11।।

अन्वयार्थ-य-और (धर्म का स्वरूप) **णियमेण**-नियम से **सीलं**-शील **वय-मुववासो**-व्रत उपवास **जिणभत्ती**-जिन भक्ति **धम्म-सवणं**-धर्म का श्रवण **मुणि-सेवा**-साधु की सेवा **वच्छल्लं**-वात्सल्य **चागो तवो**-त्याग, तप **गुण-पसंसा**-गुणों की प्रशंसा है।

दुज्जणेसु मज्झत्थं, मित्तिभावो सव्वेसु जीवेसुं।
कत्तव्वणिट्ठदा खलु, पुण्ण-धम्म-गुणणुरत्तदा य।।12।।

अन्वयार्थ-दुज्जणेसु-दुर्जनों में **मज्झत्थं**-माध्यस्थ **सव्वेसु**-सभी **जीवेसुं**-जीवों में **मित्तिभावो**-मैत्री भाव **कत्तव्वणिट्ठदा**-कर्तव्य निष्ठता **पुण्ण**-

धम्म-गुणणुरत्तदा य-पुण्यकार्य, धर्म और गुणों में अनुरक्तता (भी) **खलु**-निश्चय ही धर्म का स्वरूप है।

सम्यक् गुरु उपासक कौन?

को होदि गुरुवासगो, मिदुभासी सम्मत्तजुदो सरलो।
कट्ठ-सहिण्हु-विवेगी, विरागपुण्ण-सेवासीलो।।13।।

अन्वयार्थ-गुरुवासगो-गुरु का उपासक **को**-कौन **होदि**-होता है? **सम्मत्तजुदो**-सम्यक्त्व युक्त **मिदुभासी**-मधुर वाणी बोलने वाला **सरलो**-सरल **कट्ठसहिण्हु-विवेगी**-कष्ट सहिष्णु विवेकवान् **विराग-पुण्ण-सेवासीलो**-सेवा करने वाला व वैराग्य से परिपूर्ण (गुरु का उपासक होता है।)

गुरुगुण-तिव्वाकंखी, अहंकारिस्सा-लोह-विहीणो वि।
णिम्मल-पसण्ण-चित्तो, मणोभाव-णादू विणयी य।।14।।

अन्वयार्थ-गुरुगुण-तिव्वाकंखी-गुरु के गुणों का तीव्र आकांक्षी **अहंकारिस्सा-लोह-विहीणो वि**-अहंकार, ईर्ष्या, लोभ से भी विहीन **णिम्मल-पसण्ण-चित्तो**-निर्मलचित्त, प्रसन्नचित्त **मणोभाव-णादू**-मनोभावों को जानने वाला **य**-और **विणयी**-विनयशील गुरु का उपासक होता है।

गुरुचित्ते संलीणो, इंगिदाणुरूव-पवट्टगो सया।
णो लोगिग-सुह-कंखी, गुरुभत्तीए पिवासयो य।।15।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **गुरुभत्तीए पिवासयो**-गुरु भक्ति का पिपासक **इंगिदाणुरूव-पवट्टगो**-संकेतानुसार प्रवृत्ति करने वाला जो **लोगिग-सुह-कंखी**-लौकिक सुख का आकांक्षी **णो**-नहीं है **य**-और **गुरुचित्ते**-गुरु के चित्त में **संलीणो**-लीन (गुरु का उपासक कहलाता है।)

मानव चिंतित कब होता है

कदा चिंतामइओ य, णरो लक्खविहीण-जीवणं होदि।
कत्तव्व-हणणेणं हु, अहियाराण दुरुवजोगेण।।16।।

अन्वयार्थ-चिंतामइयो-चिंतायुक्त **णरो**-व्यक्ति **कदा**-कब **होदि**-होता है **हु**-निश्चय ही **लक्खविहीण-जीवणं**-जब लक्ष्य विहीन जीवन होता है (तब व्यक्ति चिंतायुक्त होता है।) **वा कत्तव्व-हणणेणं**-कर्तव्यों के हनन से **य**-और **अहियाराण**-अधिकारों के **दुरुवजोगेण**-दुरुपयोग से व्यक्ति चिंतित होता है।

छल-जुत्त-ववहारेण, इस्साए परगुणगोवणेणं च।
भोदिगाकस्सणेणं, अविवेगेण वित्ति-दमणेण।।17।।

अन्वयार्थ-छलजुत्त-ववहारेण-छल युक्त व्यवहार से **इस्साए-परगुणगोवणेणं**-ईर्ष्यापूर्वक दूसरों के गुणों को छिपाने से **भोदिगा-कस्सणेणं**-भौतिक आकर्षण से **अविवेगेण**-अविवेक के द्वारा **च**-और **वित्ति-दमणेण**-वृत्तियों के दमन से (मानव चिंतित होता है।)

भविस्स-कुकप्पणाए, समिइए भूद-दुहप्पसंगाणं ।
सया विसयासत्तीइ, अयारणेणं कुदाणेणं।।18।।

अन्वयार्थ-भविस्स-कुकप्पणाए-भविष्य की कुकल्पना करने से, **भूद-दुहप्पसंगाणं**-अतीत के दु:खद प्रसंगों की **समिइए**-स्मृति से **सया**-सर्वदा **विसयासत्तीइ**-विषयों में आसक्ति करने से और **अयारणेणं**-अकारण **कुदाणेणं**-कुदान से मानव चिंतित होता है।

वर्तमान के कल्पवृक्ष

काणि य कप्परुक्खाणि, संपइ खलु जीवाणं इहलोये।
णाणिं होच्चा विणयी, अइ-सुंदरो सील-जुत्तो वि।।19।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **संपइ**-वर्तमान समय में **इहलोये**-इस लोक में **जीवाणं**-जीवों के लिए **कप्परुक्खाणि**-कल्पवृक्ष **काणि**- कौन से हैं **णाणिं**-ज्ञानी **होच्चा**-होकर **विणयी**-विनयी होना **य**-और **अइ-सुंदरो**-अति सुन्दर (होकर भी) **सील-जुत्तो वि**-शीलवान् होना।

धणिअं होच्चा दाणी, अहिगारिं होच्चा णायसीलो वि।
संगदी गुणीजणाण, सत्तिजुत्तं खमासीलो य।।20।।

अन्वयार्थ-धणिअं-धनी **होच्चा**-होकर **दाणी**-दानी **अहिगारिं**- अधिकारी **होच्चा**-होकर **णायसीलो**-न्यायशील **गुणीजणाण**-गुणीजनों की **संगदी**-संगति **य**-और **सत्तिजुत्तं**-शक्ति युक्त होकर **खमासीलो**-क्षमाशील (होना)।

णरपुंगवो बुहजणो, बंधो हु पुण्णाणुबंधि-पुण्णस्स।
पहुभत्तीइ रंजणं, आयंस-सिक्खगो होज्जा य।।21।।

अन्वयार्थ-णरपुंगवो-नरपुंगव (होना) **बुहजणो**-विद्वान् (होना) **पुण्णाणुबंधि-पुण्णस्स**-पुण्यानुबंधी पुण्य का **हु**-ही **बंधो**-बंध करना **पहुभत्तीइ**-जिनभक्ति में **रंजणं**-मन लगना **य**-और **आयंस-सिक्खगो**-आदर्श शिक्षक **होज्जा**-होना।

सण्णाणस्स पिवासा, मूगो बहिरो दोसाण भासणे।
सययभावणमप्पाण, इमाणि होंति कप्परुक्खाणि।।22।।

अन्वयार्थ-सण्णाणस्स-सम्यग्ज्ञान की **पिवासा**-पिपासा **दोसाण**-दोषों के **भासणे**-कहने में **मूगो**-मूक **बहिरो**-(सुनने में) बधिर **सययभावणमप्पाण**-आत्मा की निरंतर भावना भाना **इमाणि**-ये **कप्परुक्खाणि**-कल्पवृक्ष **होंति**-होते हैं।

क्षेमंकरी शिक्षा

का खेमंकरि-सिक्खा, कोहसमणं उचिदसमयम्मि तहा।
गुणीसु विणम्म-वित्ती, हिद-मिय-पिय-वदणं च णिच्चं।।23।।

अन्वयार्थ-खेमंकरि-सिक्खा-क्षेमंकरी शिक्षा **का**-क्या है? **उचिद-समयम्मि**-उचित समय में **कोह-समणं**-क्रोध का शमन **गुणीसु**-गुणीजनों में **विणम्म-वित्ती**-विनम्र वृत्ति रखना **णिच्चं**-नित्य **हिद-मिय-पिय-वदणं**-हितकारी, मृदु और प्रिय वचन बोलना।

मिदु-ववहारो णिच्चं, समत्त-भावो खलु दुक्खसुहम्मि य।
पुण्णस्स सदुवजोगो, कया वि पर-णिंदणं णेव।।24।।

अन्वयार्थ-णिच्चं-नित्य **मिदुववहारं**-मृदु व्यवहार **करणं**-करना **दुक्खसुहम्मि**-दु:ख और सुख में **खलु**-निश्चय ही **समत्त-भावं**-समताभाव रखना **पुण्णस्स**-पुण्य का **सदुवजोगं**-सदुपयोग करना **य**-और **कया वि**-कभी भी **पर-णिंदं**-पर निंदा **णो**-नहीं करना।

सुचिंतण-करणं सया, णिक्कंखेण कत्तव्वजुदो होज्ज।
गुणीजणेसुं णेहो, कयण्णु-परोवयारी होज्ज।।25।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **सुचिंतण करणं**-सकारात्मक चिंतन करना **णिक्कंखेण**-नि:कांक्षभाव से **कत्तव्वजुदो**-कर्त्तव्ययुक्त **गुणीजणेसु णेहो**-गुणीजनों में स्नेह या अनुराग होना **कयण्णु-परोवयारी य**-कृतज्ञ और परोपकारी **होज्ज**-होना।

पडिसोह-भाव-रहिदो, सव्व-सुह-परिवड्ढणं सव्वदा य।
णिस्सत्थ-णेह-भावो, परदुहं वि सगोव्व मणणं हु।।26।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय ही **सव्वदा**-हमेशा **सव्वसुहं**-सर्व सुख **परिवड्ढणं**-संवर्धन करना **य**-और **पडिसोह-भाव-रहिदो**-प्रतिशोध के भाव से रहित (होना) **णिस्सत्थ-णेह-भावो**-नि:स्वार्थ स्नेह/प्रेम का भाव **परदुहं वि सगोव्व**-दूसरों का दु:ख भी अपने जैसा **मणणं**-मानना।

अशांत मन के हेतु

किमसंतचित्त-हेदू , भावणा पडिसोह-वासणाणं च।
इस्साइ णिरासाए, अभक्ख-भक्खेदुं हिंसाइ।।27।।

अन्वयार्थ-किमसंतचित्त-हेदू-अशान्त चित्त/मन के कारण क्या हैं **पडिसोह-वासणाणं**-प्रतिशोध, वासना **इस्साइ**-ईर्ष्या **णिरासाए**-निराशा **अभक्ख-भक्खेदुं**-अभक्ष्य भक्षण के लिए **हिंसाइ**-हिंसा की **भावणा**-भावना (अशान्त मन के हेतु हैं)।

अणहिगारि-चेट्ठाए, विणा परिस्समेण अइलाहस्स य।
अण्णायेण जयस्स य, सत्ता-कंखाइ हिंसाए।।28।।

अन्वयार्थ-य-और **अणहिगारि-चेट्ठाए**-अनधिकारी चेष्टा, **परिस्समेण**-परिश्रम के **विणा**-बिना **अइलाहस्स**-अतिलाभ की **अण्णायेण**-अन्याय द्वारा **जयस्स**-विजय की **य**-और **हिंसाए**-हिंसा के द्वारा **सत्ता-कंखाइ**-सत्ता की आकांक्षा की (भावना अशान्त मन के हेतु हैं)।

संगे आसत्तीए, मुत्ति-भावणा विणा साहणाए।
कवडेणमसुह-कंखा, छलभावो य हेदू णिच्चं।।29।।

अन्वयार्थ-संगेआसत्तीए-परिग्रह में आसक्ति की भावना **साहणाए**-साधना के **विणा**-बिना **मुत्ति-भावणा**-मुक्ति की भावना **कवडेणमसुह-कंखा**-कपट के द्वारा अशुभ कार्य करने की इच्छा या भावना **य**-और **णिच्चं**-नित्य **छलभावो**-छल की भावना (अशान्त मन के) **हेदू**-हेतु हैं।

मन की शांति के उपाय

किं चित्त-संति-हेदू , गुणीजणेसुं पमोदो णियमेण।
धम्मीसु हरिसभावो, मित्ति-भावो सव्वजीवेसु।।30।।

अन्वयार्थ-चित्त-संति-हेदू-चित्त की शांति के हेतु (उपाय) **किं**-क्या हैं? **णियमेण**-नियम से **गुणीजणेसुं**-गुणीजनों में **पमोदो**-प्रमोद भाव **धम्मीसु**-धार्मिकों में **हरिसभावो**-हर्षभाव **सव्वजीवेसु**-सर्व जीवों में **मित्ति-भावो**-मैत्री भाव (मन की शान्ति के उपाय हैं।)

पुज्जेसुं अणुराओ, णिच्चं धम्म-कज्जेसु उच्छाहो।
अप्प-तच्चम्मि पीदी, देवसत्थ-गुरूसु सद्धा य।।31।।

अन्वयार्थ-पुज्जेसुं-पूज्य पुरुषों में **अणुराओ**-अनुराग **णिच्चं**-नित्य **धम्मकज्जेसु**-धर्म कार्यों में **उच्छाहो**-उत्साह **अप्प-तच्चम्मि**-आत्मतत्त्व में **पीदी**-प्रीति **य**-और **देव-सत्थगुरूसु सद्धा**-देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान् मन की शान्ति के उपाय हैं।

गुरुभत्ती गुरुसेवा, णिब्बलेसुं खमाभावो य सया।
दीणेसुं अणुकंवा, मज्झत्थो धम्म-विरोहीसु।।32।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **गुरुभत्ती**-गुरुओं के प्रति भक्ति **गुरुसेवा**- गुरु की सेवा **णिब्बलेसुं**-निर्बलों पर **खमाभावो**-क्षमा-भाव **दीणेसुं**-दीन-दुखियों पर **अणुकंवा**-अनुकंपा **य**-और **धम्म-विरोहीसु**-धर्म के विरोधियों पर **मज्झत्थो**-माध्यस्थ भाव (मन की शान्ति के उपाय हैं।)

मूर्ख कौन?

को होदि मूढ-बुद्धी, विग्घ-पेम्मी जो धम्मकज्जेसुं।
गुरु-सेवाए हीणो, सत्ति-समय-सुसाहणेसुं वि।।33।।

अन्वयार्थ-मूढ-बुद्धी-मूर्ख बुद्धि **को**-कौन **होदि**-होता है? **जो**-जो **धम्म-कज्जेसुं**-धर्म-कार्यों में **विग्घ-पेम्मी**-विघ्न प्रेमी (या विघ्न डालने वाला) **सत्ति-समय-सुसाहणेसुं वि**-शक्ति, समय और सुसाधन होने पर भी **गुरु-सेवाए**-गुरु सेवा से **हीणो**-हीन है वह मूर्ख है।

दुट्ठो णट्ठ-बुद्धी य, कलहपियो वंचगो पिसुणो जो वि।
कोही भोयण-भयणे, कोह-माणजुत्तो पुज्जेसु।।34।।

अन्वयार्थ-जो-जो **दुट्ठो**-दुष्ट **णट्ठ-बुद्धी**-नष्ट बुद्धि **कलह-पियो**-कलह प्रिय **वंचगो-छल**-कपट करने वाला **पिसुणो**-धोखा देने वाला **भोयण-भयणे**-भोजन एवं भजन के समय **कोही**-क्रोध करने वाला **य**-और **पुज्जेसु**-पूज्यनीयों में **कोह-माणजुत्तो**-क्रोध और मान से युक्त **वि**-भी (मूर्ख है)।

धम्मादो णिरवेक्खो, अकारणं हास-रोयण-जुत्तो य।
कयग्घो अप्पपसंसो, रोयसमये पत्थहीणो वि।।35।।

अन्वयार्थ-धम्मादो-धर्म से **णिरवेक्खो**-निरपेक्ष **अकारणं**-अकारण **हास-रोयण-जुत्तो**-हास्य और रुदन करने वाला **कयग्घोअप्पपसंसो**-कृतघ्न और आत्म प्रशंसक **य**-और **रोय-समये वि**-रोग होने पर भी **पत्थहीणो**-पथ्य से हीन (मूर्ख है)।

पर-णिंदगो य लोही, धम्मकहासु पलावी जो णिच्चं।
संवादेसु विवादी, गद-चिंतगो भविस्सस्स अवि।।36।।

अन्वयार्थ-जो-जो **परणिंदगो-पर**-निंदा करने वाला **लोही**-लोभी **धम्मकहासु**-धर्म कथाओं में **पलावी**-बकवाद करने वाला **संवादेसु**-संवाद या वार्तालाप में **विवादी**-विवाद करने वाला **णिच्चं**-नित्य **गद-चिंतगो**-जो बीत गया है उसके विषय में सोचने वाला **य**- और **भविस्सस्स अवि**-भविष्य की भी चिंता करने वाला मूर्ख है।

बेमज्झेसुं भासदि, अवमाणं च करेदि सज्जणा जो।
दुम्मग्गे आसत्तो, इत्थीसु कुव्वदि विस्सासं।।37।।

अन्वयार्थ-जो-जो **बे मज्झेसुं**-दो के मध्य में **भासदि**-बोलता है **सज्जणा**-सज्जनों का **अवमाणं**-अपमान **करेदि**-करता है **दुम्मग्गे**- बुरे पथ/कुपथ पर **आसत्तो**-आसक्त है **च**-और **इत्थीसु**-स्त्रियों पर **विस्सासं**-विश्वास **कुव्वदि**-करता है (वह मूर्ख है)।

ऐसे बनो, ऐसे नहीं

किं होदु ण होदु किं च, समिक्खगो णालोयगो होदु खलु।
होदु सरलो ण मूढो, साहिमाणी होदु ण माणी।।38।।

अन्वयार्थ-किं-क्या **होदु**-बनो **च**-और **किं**-क्या **ण**-नहीं **होदु**-बनो **खलु**-निश्चय ही **समिक्खगो**-समीक्षक **होदु**-हो **णालोयगो**-न कि आलोचक, **सरलो**-सरल **होदु**-बनो **मूढो**-मूर्ख **ण**-नहीं, **साहिमाणी**-स्वाभिमानी **होदु**-हो **माणी**-मानी (अहंकारी) **ण**-नहीं।

सतंतो ण सच्छंदो, कायरो वि णो होदु खमासीलो।
अप्पव्वई ण किवणो, पसंसगो कया णिंदगो ण।।39।।

अन्वयार्थ-सतंतो-स्वतंत्र बनो **सच्छंदो**-स्वच्छंद **ण**-नहीं, **खमासीलो वि**-क्षमाशील भी **होउ**-बनो **णो कायरो**-कायर नही, **अप्पव्वई**-अल्पव्ययी बनो **किवणो**-कृपण **ण**-नहीं, **पसंसगो**- प्रशंसक बनो **कया**-कभी भी **णिंदगो**-निदंक **ण**-नहीं बनो।

पुरिसत्थी पमादी ण, होज्ज णायी णो णिद्दयी कया वि।
होदु खलु सारभूदो, भारभूदो ण होदु कहिं पि।।40।।

अन्वयार्थ-पुरिसत्थी-पुरुषार्थी **होज्ज**-बनो **पमादी ण**-प्रमादी नहीं **णायी**-न्यायी बनो **कया वि**-कभी भी **णिद्दयी**-निर्दयी **णो**-नहीं **य**-व **खलु**-निश्चय ही **सारभूदो**-सारभूत **होदु**-बनो **कहिं पि**-किसी पर भी **भारभूदो**-भारभूत **ण होदु**-नहीं बनो।

होज्ज सुसीलो दाणी, मित्तेसु विणयी पेम्मी धीरो य।
णो कुसीलो जायगो, सत्तु-सुत्तो दुट्ठासत्तो।।41।।

अन्वयार्थ-सुसीलो-सुशील **दाणी**-दानी **होज्ज**-होओ **मित्तेसु**-मित्रों में **विणयी**-विनयी **पेम्मी**-प्रेमी **य**-और **धीरो**-धीर बनो **कुसीलो**-कुशील **जायगो**-याचक **दुट्ठासत्तो सत्तुसुत्तो**-दुष्ट, आसक्त, शत्रु और सुप्त **णो**-नहीं बनो।

होज्ज सया उच्छाही, सज्जणो णिउणो सुदिढ-संकप्पी।
होज्ज कया वि पमादी, णो हढी य दुज्जणो धुत्तो।42।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **उच्छाही**-उत्साही, **सज्जणो**-सज्जन, **णिउणो**-निपुण, **सुदिढ-संकप्पी**-दृढ़ संकल्पी **होज्ज**-हो/बनो **कया वि**-कभी भी **पमादी**-प्रमादी **हढी दुज्जणो धुत्तो य**-हठी, दुर्जन और धूर्त **णो होज्ज**-नहीं बनो।

श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता

को वरो कज्जकत्ता, कत्तव्वणिट्ठो अप्पविस्सासी।
दयासील-सुचिंतगो, पमाणिगो उज्जमी खलु जो।।43।।

अन्वयार्थ-वरो कज्जकत्ता-श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता **को**-कौन है? **सो**-जो **खलु**-निश्चय ही **उज्जमी**-उद्यमशील **पमाणिगो**-प्रामाणिक **दयासील**-सुचिंतगो-दयाशील, शुभचिंतक, **कत्तव्वणिट्ठो**-कर्त्तव्यनिष्ठ **अप्पविस्सासी**-आत्मविश्वासी हो।

णियमिदो समयसीलो, ववहार-कुसलो दूरदिट्ठो सो।
णिम्मलचित्तो णेही, अहिगाराण सदुवजोगी य।।44।।

अन्वयार्थ-और **जो**-जो **णियमिदो समयसीलो**-नियमित, समयनिष्ठ **ववहार-कुसलो**-व्यवहार कुशल **दूरदिट्ठो**-दूरदृष्टा **णिम्मलचित्तो**-निर्मल चित्त **णेही**-स्नेही **य**-और **अहिगाराण**- अधिकारों का **सदुवजोगी**-सदुपयोगी हो।

अमृत कुंड

किं होदि अमियकुंडो, मिदु-चित्तो णिम्मलदिट्ठि-सुभासी।
खमाजुत्ता सत्ती य, णयप्पमाण-जुत्ता बुद्धी।।45।।

अन्वयार्थ-**अमियकुंडो**-अमृत कुंड **किं**-क्या **होदि**-होता है? **मिदु-चित्तो**-कोमल चित्त **णिम्मलदिट्ठि-सुभासी**-निर्मल दृष्टि, मधुरभाषी **खमाजुत्ता सत्ती**-क्षमायुक्त शक्ति **य**-और **णयप्पमाण-जुत्ता बुद्धी**-नय और प्रमाण से युक्त बुद्धि (अमृतकुण्ड है)।

पर-हिद-हेदू लच्छी, विणम्मवित्ती पहुत्तसत्तीए।
णाणं माण-विहीणं, सीलजुदं रूव-लावण्णं।।46।।

अन्वयार्थ-**पर-हिद-हेदू**-पर-हित के लिए **लच्छी**-लक्ष्मी या धन **माण-विहीणं**-मान से विहीन **णाणं**-ज्ञान और **पहुत्तसत्तीए**-प्रभुत्व शक्ति में **विणम्मवित्ती**-विनम्र वृत्ति **सीलजुदं**-शील से संयुक्त **रूव-लावण्णं**-रूप लावण्य (अमृतकुण्ड है।)

धर्म-चक्रवर्ती के रत्न

धम्म-चक्किणो णिच्चं, काणि होंति दिव्व-रयणाणि लोये।
होंति चोद्दह-रयणाणि, सवर-हिद-कारणं णियमेण।।47।।

अन्वयार्थ-**लोये**-लोक में **णिच्चं**-नित्य ही **धम्म-चक्किणो**-धर्म चक्रवर्ती के **काणि**-कितने **दिव्व-रयणाणि**-दिव्य रत्न **होंति**-होते हैं? **णियमेण**-नियम से **चोद्दह-रयणाणि**-चौदह रत्न **होंति**-होते हैं (ये) **सवर-हिद-कारणं**-स्वपर हित के कारण हैं।

सया धम्माणुराओ, णिग्गंथाणमुवासणा-भत्ती य।
जिण-तित्थे अइ-पीदी, उक्किट्ठ-भावणा करुणाइ।।48।।

जिणेदेवस्स सुभत्ती, अरिहाणं वयणे परमासत्ती।
आयंस-जीवणं खलु, ववहार-कुसलघभीरुदा य।।49।।

विसयेसु अणासत्ती, णिम्मलचित्तं णिद्दोसचरियं च।
सग-चित्ते हु लीणदा, सुह-दुक्खेसु समत्तभावो।।50।।

अन्वयार्थ-सया-सदा **धम्माणुराओ**-धर्मानुराग **णिग्गंथाणमुवासणा-भत्ती य**-निर्ग्रंथ गुरु की उपासना और सम्यक्भक्ति **जिणतित्थे**-जिन तीर्थ में **अइपीदी**-अति प्रीति **य**-और **करुणाइ**-करुणा की **उक्किट्ठ-भावणा**-उत्कृष्ट भावना **खलु**-निश्चय से **जिणदेवस्स**-जिनदेव की **सुभत्ती**-सम्यक् भक्ति **अरिहाणं वयणे**-अरिहंत भगवान् के वचन में **परमासत्ती**-परम आसक्ति **ववहार-कुसलघभीरुदा**-व्यवहार कुशल और पापों से डरा होना **आयंस-जीवणं**-आदर्श जीवन **विसयेसु**-विषयों में **अणासत्ती**-अनासक्ति **णिम्मलचित्तं**-निर्मल चित्त **णिद्दोसचरियं**-निर्दोष चरित्र **हु**-निश्चय ही **सग-चित्ते**-स्वचित्त में **लीणदा**-लीनता **च**-और **सुह-दुक्खेसु**-सुख-दुःख में **समत्तभावो**-समता का भाव ये धर्म चक्रवर्ती के चौदह रत्न हैं।

सज्जनों को अप्रिय

सज्जणा णो रुच्चंति, किं कारणं भासंति सण्णाणी।
सिद्धंतहीण-णीदी, कूडकवडेणज्जिद-जयो वि।।51।।

अन्वयार्थ-सण्णाणी-सम्यग्ज्ञानी **किं**-क्या **कारणं**-कारण **भासंति**-कहते हैं जो **सज्जणा**-सज्जनों को **णो रुच्चंति**-अच्छे नहीं लगते हैं **सिद्धंतहीण-णीदी**-सिद्धांतहीन नीति और **कूड-कवडेणज्जिद-जयो वि**-छल-कपट से अर्जित जय भी सज्जनों को अच्छी नहीं लगती।

विणा समेणं लद्धी, दयाहीण-सव्व-धम्म-कज्जाणि य।
णाण-विहीणं चरियं, संजमहीण-बहुसुद-णाणं।।52।।

अन्वयार्थ-समेणं-परिश्रम के **विणा**-बिना **लद्धी**-प्राप्ति **दयाहीण-सव्वधम्मकज्जाणि**-दया से रहित सभी धर्म कार्य **णाण-विहीणं**- ज्ञान से रहित **चरियं**-चारित्र **य**-और **संजमहीण-बहुसुदणाणं**- संयम से रहित बहुत श्रुतज्ञान (सज्जनों को अच्छा नहीं लगता)।

णाय-विहीणं वणिजं, अभक्ख-पदत्थाणं भक्खणं खलु।
पयाए सहण्णायं, अज्झप्प-विहीण-विण्णाणं।।53।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय ही **णाय-विहीणं**-न्याय से रहित **वणिजं**-व्यापार **अभक्ख-पदत्थाणं**-अभक्ष्य पदार्थों का **भक्खणं**-भक्षण करना **पयाए**-प्रजा के **सह**-साथ **अण्णायं**-अन्याय **अज्झप्प-विहीण-विण्णाणं**-अध्यात्म से रहित विज्ञान (सज्जनों को अच्छा नहीं लगता)।

विणाणुसासणं सहा, सग-जीवणं रज्ज-संचालणं च।
सड्ढा-भत्ति-विहीणा, थुदि-पूया-तित्थवंदणा वि।।54।।

अन्वयार्थ-विणाणुसासणं-अनुशासन के बिना **सहा**-सभा **सग- जीवणं रज्ज-संचालणं च**-स्वजीवन और राज्य का संचालन **सड्ढा-भत्ति-विहीणा**-श्रद्धा-भक्ति से रहित **थुदि-पूया-तित्थवंदणा वि**-स्तुति, पूजा और तीर्थ वंदना भी (सज्जनों को अच्छे नहीं लगते हैं)।

कभी मत भूलिए

किं कया णो विसरेज्ज, सत्तं लहिऊण चिअ णायमग्गं।
लहिच्चु भव-सुह-विहवं, विसरेज्जा णो कया धम्मं।।55।।

अन्वयार्थ-कया-कभी भी **किं**-क्या **णो**-नहीं **विसरेज्ज**-भूलना चाहिए **चिअ**-निश्चय ही **सत्तं**-सत्ता को **लहिऊण**-प्राप्त कर **णायमग्गं**-न्याय मार्ग को **भवसुह-विहवं**-संसार सुख के वैभव को **लहिच्चु**-प्राप्त कर **कया**-कभी **धम्मं**-धर्म को **णो**-नहीं **विसरेज्जा**-भूलना चाहिए।

विवाहणंतर-पिदरं, रोयजुइए सया संजम-भावं।
कोहे सुअप्प-भावं, सच्चं ववहार-वणिजेसु य।।56।।

अन्वयार्थ-विवाहणंतर-पिदरं-विवाह के बाद माता-पिता को **रोयजुइए**-रोग युक्तता में **सया**-सदा **संजमभावं**-संयम के भाव को **कोहे**-क्रोध आने पर **सुअप्प-भावं**-शुद्ध आत्मा के भाव को **य**-और **ववहार-वणिजेसु**-व्यवहार व वाणिज्य में **सच्चं**-सत्य को नहीं भूलना चाहिए।

अप्पं पडि उवयारं, दाण-पुण्णं धम्मं दरिद्दाए।
अणुचिद-कज्जे भयवं, पाव-फलं ण कया विसयेसु।।57।।

अन्वयार्थ-अप्पं-आत्मा के **पडि**-प्रति **उवयारं**-उपकार को **दरिद्दाए**-दरिद्रता में **दाण-पुण्णं धम्मं**-दान, पुण्य और धर्म को **अणुचिद-कज्जे**-अनुचित कार्य करने पर **भयवं**-भगवान् को **विसयेसु**-विषयों में **पावफलं**-पाप फल को **कया**-कभी **ण**-नहीं (भूलना चाहिए)।

क्रोधी कौन नहीं

को णो कुव्वदि कोहं, अप्पदिट्ठो सवरकल्लाणत्थी।
विण्णाणि-गुणग्गाही, सज्झायी गुरुकिवाकंखी।।58।।

अन्वयार्थ-कोहं-क्रोध को **को**-कौन **णो**-नहीं **कुव्वदि**-करता? **अप्पदिट्ठो**-आत्मदृष्टा **सवरकल्लाणत्थी**-स्वपर कल्याण को चाहने वाला **विण्णाणि-गुणग्गाही**-विज्ञानी, गुणग्राही **सज्झायी**-स्वाध्यायी **गुरु-किवाकंखी**-गुरु की कृपा की इच्छा करने वाला (क्रोध नहीं करता है।)

कम्मक्खयत्थि-भव्वा, सव्व-गुणागरा महापुरिसा खलु।
सग-दोसा पेक्खी वा, कोहं णो कुव्वंति कया वि।।59।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय ही **कम्मक्खयत्थि-भव्वा**-कर्मों का क्षय करने वाले भव्य **सव्व-गुणागरा महापुरिसा**-सर्वगुणों के भण्डार महापुरुष **वा**-अथवा **सग-दोसा**-स्वदोषों को **पेक्खी**-देखने वाला **कोहं**-क्रोध **कया वि**-कभी भी **णो**-नहीं **कुव्वंति**-करते हैं।

लोकप्रिय कौन?

को होदि लोगप्पियो, णिस्सत्थ-सेवगो सहजो सरलो।
विणयी सग्गुणपुंजो, हियमिय-भासी कयण्णू खलु।।60।।

अन्वयार्थ-लोगप्पियो-लोकप्रिय **को**-कौन **होदि**-होता है **खलु**- निश्चय ही **णिस्सत्थ-सेवगो**-नि:स्वार्थ सेवी **सहजो**-सहज **सरलो**- सरल **विणयी**-विनयशील **सग्गुणपुंजो**-सद्गुणों का पुंज **हिय- मियभासी**-हित-मित वचन बोलने वाला और **कयण्णू**-कृतज्ञ (लोकप्रिय होता है।)

अदिसय-पुण्णवंतो वि, लोगववहारी सया संतोसी।
सव्व-हिदेसी णाणी, सीलजुत्तो य सयायारी।।61।।

अन्वयार्थ-अदिसय-पुण्णवंतो-अतिशय पुण्यवान् **लोगववहारी**- लोक-व्यवहारी **सया-संतोसी**-सदा संतोषी **सव्वहिदेसी**-सर्व हितैषी **णाणी**-ज्ञानी **सीलजुत्तो**-शीलयुक्त (शीलवान्) **य**-और **सयायारी**- सदाचारी **वि**-भी लोकप्रिय होते हैं।

गुरु भक्ति का फल

किं च सुगुरुभत्ति-फलं, गुरु-णेहो सम्मत्ताइ-रयणाणि।
सुसंघयण-संठाणं, आरोग्ग-बोहि-इड्ढि-लाहो।।62।।

अन्वयार्थ-सुगुरुभत्ति-फलं-सुगुरु की भक्ति का फल **किं**-क्या है **गुरु-णेहो**-गुरु का वात्सल्य **सम्मत्ताइ-रयणाणि**-सम्यक्त्वादि रत्न **सुसंघयण-संठाणं**-श्रेष्ठ संहनन और संस्थान **आरोग्ग-बोहि-इड्ढि-लाहो च**-आरोग्य, बोधि और ऋद्धि का लाभ होता है।

णर-सुरेहिं च पुज्जा, पावंति देविंद-सुह-संपत्तिं।
सेट्ठं परमप्प-पदं, णिक्कम्मदसं वि लहंति खलु।।63।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय ही **णर-सुरेहिं च**-मनुष्य और देवों द्वारा **पुज्जा**-पूज्य **देविंद-सुह-संपत्तिं**-देवेंद्र की सुख सम्पत्ति को **पावंति**-प्राप्त करते हैं **सेट्ठं परमप्प-पदं**-श्रेष्ठ परमात्मपद **णिक्कम्मदसं**-निष्कर्म दशा को भी **लहंति**-पाते हैं।

पावंति सुहं कित्तिं, पमाणिगजीवणमप्पसुहसंतिं।
सत्तेहिं अदिणेहं, णवणिहिं पंचकल्लाणं च।।64।।

अन्वयार्थ-सुहं-सुख और **कित्तिं**-कीर्ति को **पमाणिगजीवणमप्प-सुहसंतिं च**-प्रामाणिक जीवन आत्मसुख और शांति को **सत्तेहिं**- जीवों द्वारा **अदिणेहं**-अतिस्नेह/वात्सल्य को **णवणिहिं-पंचकल्लाणं**-नवनिधि और पंचकल्याणक को **पावंति**-प्राप्त करते हैं।

संयम के स्थान

कत्थ कस्स य धारेज्ज, संजमो राय-संमुहे णयणेसु।
जुवदि-मज्झे कायम्मि, पयाए संमुहे वयणेसु।।65।।

अन्वयार्थ-संजमो-संयम **कत्थ**-कहाँ और **कस्स**-किसका **धारेज्ज**-धारण करना चाहिए? **राय-संमुहे**-राजा के आगे **णयणेसु**-आँखों पर **जुवदि-मज्झे**-युवती के बीच **कायम्मि**-शरीर पर **पयाए**-प्रजा के **संमुहे**-सम्मुख **वयणेसु**-वचनों पर संयम धारण करना चाहिए।

साहु-अग्गे चित्तम्मि, सिसुणो संमुहे सगभावणासुं।
कम्मुदये कसायेसु, तहेव इंदियजयम्मि सया।।66।।

अन्वयार्थ-साहु-अग्गे-साधुओं के सामने **चित्तम्मि**-चित्त पर, **सिसुणो**-शिशुओं के **संमुहे**-सम्मुख **सगभावणासुं**-स्वभावनाओं पर **कम्मुदये**-कर्मोदय के समय में **कसायेसु**-कषायों पर **तहेव**-उसी प्रकार **इंदियजयम्मि**-इंद्रिय जय में **सया**-सदा (संयम धारण करना चाहिये।)

अच्छे समय के लक्षण

किं च सुयाल-लक्खणं, णाणीहिं परामस्स-गहणं खलु।
विणयो पुज्ज-पुरिसाण, सज्जणाण सुसंगदी सया।।67।।

अन्वयार्थ-सुयाल-लक्खणं-अच्छे समय के लक्षण **किं**-क्या हैं? **णाणीहिं**-ज्ञानियों से **परामस्स-गहणं**-परामर्श ग्रहण करना **पुज्ज-**

पुरिसाण-पूज्य पुरुषों की **खलु**-निश्चय ही **विणयो**-विनय करना **च**-और **सया**-सदा **सज्जणाण**-सज्जनों की **सुसंगदी**-सुसंगति करना (ये अच्छे समय के लक्षण हैं)।

गुण-धम्मेसुं णेहो, सच्चे गहणे उज्जमसीलदा य।
धम्म-कज्जे लीणदा, ओदारियं ववहारे सय।।68।।

अन्वयार्थ-गुणधम्मेसुं-गुण और धर्म में **णेहो**-स्नेह **सच्चे गहणे**- सत्य ग्रहण करने में **उज्जमसीलदा**-उद्यमशीलता **धम्म-कज्जे**-धर्म कार्य में **लीणदा**-लीनता **य**-और **सय**-सदा **ववहारे**-व्यवहार में **ओदारियं**-उदारता (अच्छे समय के लक्षण हैं)।

आत्मघाती कौन?

को होदि अप्पघादी, सिस्सो मूढस्स दुट्ठपेम्मी तह।
सच्च-तत्थ-उवेक्खगो, अदिरत्तो विसयभोयेसुं।।69।।

अन्वयार्थ-अप्पघादी-आत्मघाती **को**-कौन **होदि**-होता है? **मूढस्स**- मूर्ख का **सिस्सो**-शिष्य, **दुट्ठपेम्मी**-दुष्ट प्रेमी **सच्च-तत्थ-उवेक्खगो**- सत्य और तथ्य की उपेक्षा करने वाला, **तह**-तथा **विसयभोयेसुं**- विषय-भोगों में **अदिरत्तो**-अति रत (रहने वाला आत्मघाती होता है)।

बलवंतस्स विरोही, धम्मकज्जेसुं सव्वदा अलसो।
विस्सासी भंडेसुं, इत्थीइ रूवे संलीणो।।70।।

अन्वयार्थ-बलवंतस्स-बलवान् का **विरोही**-विरोधी **धम्मकज्जेसुं**-धार्मिक कार्यों में **अलसो**-आलसी **भंडेसुं**-भंडजनों पर **विस्सासी**-विश्वास करने वाला **सव्वदा**-सदा **इत्थीइ रूवे**-स्त्री के रूप सौन्दर्य में **संलीणो**-संलीन (रहने वाला आत्मघाती होता है)।

धम्मीण दुट्ठो तहा, पुण्ण-विरोही अक्ख-सेवगो खलु।
भोयासत्तो मूढो, रक्खगो अण्णायि-पावीण।।71।।

अन्वयार्थ-धम्मीण-धर्मात्माओं के लिए **दुट्ठो**-दुष्ट **पुण्ण-विरोही**-पुण्य

क्रियाओं का विरोधी **अक्ख-सेवगो**-इन्द्रियों का सेवक **भोयासत्तो**-भोगों में आसक्त **मूढो**-मूर्ख **अण्णायि-पावीण रक्खगो तहा**-पापी तथा अन्याय का रक्षक **खलु**-निश्चय ही (आत्मघाती होता है)।

क्षुद्र जीव

को होदि खुद्द-जीवो, णिय-दोस-गोवयो परणिंदयो य।
समय-णासगो माणी, जिणवयणाणं विरोही खलु।।72।।

अन्वयार्थ-खुद्द-जीवो-क्षुद्र जीव **को**-कौन **होदि**-होता है? **खलु**-निश्चय से **णियदोस-गोवयो**-स्वदोषों को छिपाने वाला **परणिंदयो**-दूसरों की निंदा करने वाला **समय-णासगो**-समय को नष्ट करने वाला **माणी**-मानी **य**-और **जिणवयणाणं विरोही**-जिन वचनों का विरोधी (क्षुद्र जीव होता है)।

कोहासत्त-कुसीलो, साहु-णिंदगो णट्ठधीमंतो य।
पिदर-गुरु-दूसगो तह, सगाहार-धंसगो खुद्दो।।73।।

अन्वयार्थ-कोहासत्त-कुसीलो य-क्रोधासक्त व कुशील **साहु-णिंदगो**-मुनियों की निंदा करने वाला **णट्ठधीमंतो**-नष्ट बुद्धि वाला **पिदर-गुरु-दूसगो**-माता-पिता और गुरु के दोषों को देखने वाला **तह**-तथा **सगाहार-धंसगो**-स्व आधार/नींव को तोड़ने वाला **खुद्दो**-क्षुद्र जीव कहलाता है।

जागरुकता कब?

कया होज्ज जागरिओ, चित्तो जदा पडदि पावकम्मेसु।
देहे य रोयजुइए, बहुमाणे सम्माणयाले।।74।।

अन्वयार्थ-कया-कब **जागरिओ होज्ज**-जागरूक होना चाहिए **जदा**-जब **चित्तो**-चित्त **पावकम्मेसु**-पापकर्मों में **पडदि**-गिरता है **देहे**-शरीर में **रोयजुइए**-रोग युक्तता होने पर **य**-और **बहुमाणे सम्माणयाले**-बहुमान और सम्मान के समय (जागरूक होना चाहिए)।

मिट्ठ-सादु-भोयणम्मि, पेक्खिय अइरूववइं वामं च।
जाणिय उप्पण्णमरिं, होज्ज गदपदिट्ठा-काले वि।।75।।

अन्वयार्थ-मिट्ठ-सादु-भोयणम्मि-मधुर स्वादु भोजन में **अइरूववइं वामं**-अति रूपवती स्त्री को **पेक्खिय**-देखकर **जाणिय उप्पण्णमरिं**-उत्पन्न शत्रु को जानकर **च**-और **गदपदिट्ठा-काले**-प्रतिष्ठा नष्ट होने वाले समय में **वि**-भी (जागरूक) **होज्ज**-होना चाहिए।

अंतिम-परिक्खाए य, जीवणस्स संजमे सिढिलदाए।
अण्णायागिट्ठीए, णियजीवण-णिण्णययालम्मि।।76।।

अन्वयार्थ-संजमे-संयम में **सिढिलदाए**-शिथिलता आने पर **जीवणस्स**-जीवन की **अंतिम-परिक्खाए**-अंतिम परीक्षा में **अण्णायागिट्ठीए**-अन्याय के आकर्षण में भी **य**-और **णियजीवण- णिण्णययालम्मि**-स्व जीवन के निर्णयकाल में (जागरूक होना चाहिए)।

श्रेष्ठ गृह

केरिसं हु सेट्ठगिहं, जणा पसण्णा लहुं पडि णेहो वि।
पुज्जेसु पुज्ज-भावो, रत्ति-भोयण-चागी होज्जा।।77।।

अन्वयार्थ-सेट्ठगिहं-श्रेष्ठ घर **हु**-निश्चय ही **केरिसं**-कैसा होता है? (जहाँ) **पसण्णा जणा**-लोग प्रसन्न **होज्जा**-हों **लहुं पडि**-छोटों के प्रति **णेहो वि**-स्नेह भी हो **पुज्जेसु**-पूज्य पुरुषों में **पुज्जभावो**-पूज्यता का भाव हो और **रत्ति-भोयण-चागी**-रात्रिभोजन त्यागी (जहाँ हों वह श्रेष्ठ घर होता है)।

सक्कारिय-संताणा, धम्मिट्ठ-णारी उराल-पहाणो।
समप्पिदा सेवगा य, सहकारि-मित्ताइं वि जत्थ।।78।।

अन्वयार्थ-जत्थ-जहाँ **सक्कारिय-संताणा**-संस्कारित संतान **धम्मिट्ठ-णारी**-धर्मिष्ठ नारी **उराल-पहाणो**-उदार प्रधान **समप्पिदा**-समर्पित **सेवगा**-सेवक **य**-और **सहकारि-मित्ताइं**-सहयोगी मित्र **वि**-भी है (वह श्रेष्ठ गृह है)।

सव्व-चिंता-विहीणा, रोगीणं विसेसज्झाण-जुत्ता।
अहिंसा-धम्म-लीणा, सग-सग कज्जे तप्परा खलु।।79।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय ही जहाँ **सव्व-चिंता-विहीणा**-सभी लोग तनाव विहीन हों **रोगीणं**-रोगियों के लिए **विसेसज्झाणजुत्ता**-विशेष ध्यान से युक्त हों **अहिंसा-धम्म-लीणा**-अहिंसा धर्म में लीन हों **व सग-सग-कज्जे**-स्व-स्व कार्य में **तप्परा**-तत्पर (जहाँ हों वह श्रेष्ठ घर होता है)।

णिंदा-वंचण-हीणा, कत्तव्वे आलस्स-रहिदा जत्थ।
रहस्स-णीदि-गोवआ, णिच्छल-भाव-जुद-सच्चत्थी।।80।।

अन्वयार्थ-णिंदा-वंचण-हीणा-निंदा और छलकपट से दूर **कत्तव्वे आलस्स-रहिदा**-कर्त्तव्य करने में आलस्य भाव से रहित **रहस्स-णीदि-गोवआ**-रहस्य नीतियों को छिपाने वाले **णिच्छल-भावजुद-सच्चत्थी**-निश्छल भाव से युक्त सत्यार्थी **जत्थ**-जहाँ हों वह श्रेष्ठ घर होता है।

कयण्णू हु संतोसी, सवरहिएसी संतपरिणामी य।
देवगुरुधम्म-भत्ता, पूयग-सत्थपाढग-दादू।।81।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय ही **कयण्णू**-कृतज्ञ **संतोसी**-संतोष से युक्त **सवरहिएसी**-स्वपर हितैषी **संतपरिणामी**-शांत परिणामी **देवगुरुधम्म-भत्ता**-जिनभक्त, गुरुभक्त तथा धर्मभक्त **पूयग-सत्थपाढग-दादू य**-पूजक, शास्त्र पढ़ने वाले और दाता (जहाँ हों वह श्रेष्ठ घर होता है)।

गिहं सेट्ठं होदि तं, अदिहि-सेवय-सुद्धभोयणकंखी।
विज्जंति जत्थ सुगुणा, जागरा य बंभमुहुत्तम्मि।।82।।

अन्वयार्थ-जत्थ-जहाँ **अदिहि-सेवय-सुद्धभोयणकंखी**-अतिथि की सेवा करने वाले हो, शुद्ध भोजन के इच्छुक हों **बंभमुहुत्तम्मि**-ब्रह्म मुहूर्त में **जागरा**-जागने वाले हों **य**-और **सुगुणा**-सद्गुण **विज्जंति**-विद्यमान हों **तं**-वह **गिहं**-घर **सेट्ठं**-श्रेष्ठ **होदि**-होता है।

सुख प्राप्ति

एरिसो किं होज्ज खलु, जहिट्ठं सुहं सव्वदा लहेदुं।
जेण विणा णरो लहदि, दुह-दुग्गदि-ताव-किलेसा य।।83।।

अन्वयार्थ-सव्वदा-सर्वदा **जहिट्ठं**-यथेष्ट **सुहं**-सुख को **लहेदुं**-प्राप्त करने के लिए **एरिसो**-ऐसा **किं**-क्या **होज्ज**-होना चाहिए **जेण विणा**-जिसके बिना **णरो**-मनुष्य **खलु**-निश्चय से **दुह-दुग्गदि-ताव-किलेसा य**-दुख, दुर्गति, संताप व क्लेश को **लहदि**-प्राप्त करता है?

होज्जप्पाणुसासगो, अण्णहा बंधणं होदि णियमेण।
वदेदु विवेग-पुव्वगं, णवरि कलहो सव्वदा हवदि।।84।।

अन्वयार्थ-अप्पाणुसासगो-आत्मानुशासक **होज्ज**-बनो **अण्णहा**-अन्यथा **णियमेण**-नियम से **बंधणं**-बंधन **होदि**-होता है **विवेग- पुव्वगं**-विवेकपूर्वक **वदेदु**-बोलो **णवरि**-अन्यथा **सव्वदा**-सदा **कलहो**-कलह **हवदि**-होता है।

होज्ज गुणगाहगो खलु, अण्णहा गुणविहीणो होज्ज सया।
करेज्जा अप्पणिंदं, णवरि सुणेज्जा सगणिंदं वि।।85।।

अन्वयार्थ-गुणगाहगो-गुणग्राहक **होज्ज**-बनो **अण्णहा**-अन्यथा **सया**-सदा **गुणहीणो**-गुणहीन **होज्ज**-रहोगे **अप्पणिंदं**-स्वनिंदा **करेज्जा**-करो **णवरि**-अन्यथा **खलु**-निश्चय ही **सगणिंदं वि**-स्वनिंदा भी **सुणेज्जा**-सुननी पड़ेगी।

गुणधारगो जदि तस्स, सया विणय-भाव-संजुत्तो होज्ज।
विणय-विहीणोत्थि जदि तु, सव्व-गुणा-णट्ठा होस्संति।।86।।

अन्वयार्थ-जदि-यदि **गुणधारगो**-गुणों का धारण करने वाला है **तु**-तो **सया**-सदा **विणय-भाव-संजुत्तो**-विनय भाव से युक्त **होज्ज**-होना चाहिए **जदि**-यदि **विणय-विहीणोत्थि**-विनय भाव से हीन है तो **तस्स**-उस मनुष्य के **सव्वगुणा**-सर्वगुण **णट्ठा**-नष्ट **होस्संति**-हो जायेंगे।

अप्पालोयणं कुणदु, सुणदु णवरि संभवो ण कल्लाणो।
अहंकारं हु हरेज्ज, अण्णहा दुग्गदी हवेज्जा ।।87।।

अन्वयार्थ-अप्पालोयणं-आत्मालोचन **कुणदु**-करो **सुणदु**-सुनो **णवरि**-अन्यथा **कल्लाणो**-कल्याण **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है। **अहंकारं**-अहंकार को **हरेज्ज**-दूर करो **अण्णहा**-अन्यथा **हु**-निश्चय ही **दुग्गदी**-दुर्गति **हवेज्जा**-होगी।

गदेण लहेदि सिक्खं, तेणं सुहं होस्सदि अणागयम्मि।
वट्टमाणं सुमज्जदि, संजमी खलु णस्सदि दुक्खं।।88।।

अन्वयार्थ-संजमी-संयमी **गदेण**-भूत/अतीत से **सिक्खं**-शिक्षा **लहेदि**-लेता है **तेणं**-उससे **अणागयम्मि**-भविष्य में **सुहं**-सुख **होस्सदि**-होगा **वट्टमाणं**-वर्तमान को **सुमज्जदि**-अच्छी तरह मार्जित करता है उससे **दुक्खं**-दु:ख **खलु**-निश्चय ही **णस्सदि**-नष्ट हो जाता है।

मोक्ष के उपाय

किं होदि मोक्खुवायो, सम्मं सद्धा भत्ती गुरुसेवा।
पत्तदाणमुववासो, वेरग्गो तित्थवंदणा वि।।89।।

अन्वयार्थ-मोक्खुवायो-मोक्ष का उपाय **किं**-क्या **होदि**-होता है? **सम्मं सद्धा भत्ती गुरुसेवा**-सम्यक् श्रद्धा, भक्ति और गुरु सेवा **पत्तदाणमुववासो**-पात्रदान, उपवास **वेरग्गो**-वैराग्य और **तित्थवंदणा**-तीर्थवंदना **वि**-भी (मोक्ष के उपाय हैं)।

तच्च-चिंतणं धम्मो, सज्झायो तवो संजमो झाणं।
रयणत्तयं णिम्मलं, लीणदा त्ति णियप्पम्मि सया।।90।।

अन्वयार्थ-तच्चचिंतणं-तत्त्व चिंतन **धम्मो**-धर्म **सज्झायो तवो संजमोझाणं**-स्वाध्याय, तप, संयम (धर्म) ध्यान और **णिम्मलं**-निर्मल **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **सया**-सदा **णियप्पम्मि**-स्वात्मा में **लीणदा त्ति**-लीनता (ये मोक्ष के उपाय हैं)।

दुःख के हेतु

किं च दुक्ख-हेदू खलु, पावकम्मं मिच्छत्तमण्णाणं।
रदी अक्ख-विसयेसुं, कसाय-पोसणं च जिणुत्तं।।91।।

अन्वयार्थ-दुक्ख-हेदू-दुःख का हेतु **किं**-क्या है? **मिच्छत्तमण्णाणं**-मिथ्यात्व, अज्ञान **पावकम्मं**-पापकर्म **च**-व **अक्ख-विसयेसुं**-इन्द्रिय विषयों में **रदी**-आसक्ति **च**-और **कसाय-पोसणं**-कषाय का पोषण करना **खलु**-निश्चय ही (दुःख के हेतु है ऐसा) **जिणुत्तं**-जिनेंद्र भगवान् ने कहा है।

रामायण से शिक्षा

सिक्खदु रामचरियेण, किं कत्तव्वपालणं मज्जादं।
पिदुभत्तिं सच्चं खलु, णियकुलधम्मस्स पालणं वि।।92।।

अन्वयार्थ-रामचरियेण-राम के चरित्र से **किं**-क्या **सिक्खदु**-सीखना चाहिए? **कत्तव्वपालणं-मज्जादं**-कर्त्तव्यपालन, मर्यादा **पिदुभत्तिं**-पितृ भक्ति **सच्चं**-सत्य **च**-और **खलु**-निश्चय ही **णियकुलधम्मस्स पालणं**-अपने कुल धर्म का पालन करना **वि**-भी (सीखना चाहिए)।

सिक्खेज्ज दसरहेणं, वयणदायणं सम्मवियारित्ता।
अवियारेण किरिया य, ण कया वि करेज्ज धीमाणो।।93।।

अन्वयार्थ-दसरहेणं-दशरथ से **सिक्खेज्ज**-सीखना चाहिए **सम्मवियारित्ता वयणदायणं**-अच्छी प्रकार से विचार कर वचन देना **य**-और **अवियारेण**-बिना विचारे **किरिया**-क्रिया **धीमाणो**- बुद्धिमान् **कया वि**-कभी भी **ण**-नहीं **करेज्ज**-करें।

सिरीसेलेण भत्ती, सच्चपालणं सया विहीसणेण।
सीदाए पइधम्मो, णियकम्म-दोस-चिंतणं खलु।।94।।

अन्वयार्थ-सिरीसेलेण भत्ती-श्रीशैल अर्थात् हनुमान से ईश-भक्ति **विहीसणेण**-विभीषण से **सया**-सदा **सच्चपालणं**-सत्य का पालन करना

सीदाए-सीता से **खलु**-निश्चय ही **पइधम्मो**-पतिधर्म का पालन और **णियकम्म-दोस-चिंतणं**-स्वकर्मों के दोष का चिंतन करना (सीखना चाहिए)।

भरहेण भादुपेम्मं, लवकुसेहि सिक्खेज्ज मादु-भत्तिं।
कुलमज्जादं वि तहा, गुरुसेवमेगग्गचित्तदं।।95।।

अन्वयार्थ-भरहेण-भरत से **भादुपेम्मं**-भ्रातृप्रेम **लवकुसेहि**-लव और कुश से **मादुभत्तिं**-मातृभक्ति **तहा**-तथा **कुल-मज्जादं**-कुल की मर्यादा **गुरुसेवं**-गुरु सेवा **एगग्गचित्तदं**-एकाग्रचित्तता **वि**-भी **सिक्खेज्ज**-सीखें।

सिक्खेज्ज रावणेणं, परित्थीए कुदिट्ठीए हाणिं।
संबुकेण कम्मगदिं, जडायुणण्णाय-विरोहं च।।96।।

अन्वयार्थ-रावणेणं-रावण से **परित्थीए**-पर-स्त्री पर **कुदिट्ठीए**- कुदृष्टि रखने से होने वाली **हाणिं**-हानि को **संबुकेण**-शंबूक से **कम्मगदिं**-कर्म की गति को **च**-और **जडायुणा-अण्णाय-विरोहं**-जटायु से अन्याय के विरोध को **सिक्खेज्ज**-सीखें।

परस्त्रीगामी

किं लहदि पर-थि-गामी, णिंदा-चिंता-सोग-भय-दुक्खाणि।
दारिद्दं वियलंगं, थावराइं होच्चु णिरयं च।।97।।

अन्वयार्थ-पर-थि-गामी-परस्त्रीगामी **किं**-क्या **लहदि**-प्राप्त करता है? **णिंदा-चिंता-सोग-भय-दुक्खाणि**-निंदा, चिंता, शोक, भय और दुःखो को **दारिद्दं**-दारिद्र **वियलंगं**-विकलांगता को **च**-और **थावराइं**-स्थावरादि **होच्चु**-होकर **णिरयं**-नरक गति को (प्राप्त करता है)।

पुण्यात्मा की पहचान

को होदि हु पुण्णप्पा, जिण-गुरु-भत्तो धम्मगुणणुरायी।
दमजुदो सीलवंतो, दया-खमा-संति-सहिदो तह।।98।।

अन्वयार्थ-**पुण्णप्पा**-पुण्यात्मा **को**-कौन **होदि**-होता है? **हु**-निश्चय ही **जिणगुरुभत्तो**-जिनभक्त, गुरुभक्त **धम्मगुणणुरायी**-धर्मानुरागी, गुणानुरागी **दमजुदो**-इन्द्रिय का दमन करने वाला **सीलवंतो**-शीलवान् **दया-खमासंति-सहिदो तह**-दया, क्षमा तथा शान्ति सहित (पुण्यात्मा होता है)।

सिद्धखेत्त-वंदगो हु, जिण-गुणचिंतगो सुधम्मसोदू वि।
ठावगो चेइयाणं, पावादु विरत्तचित्तो सो।।99।।

अन्वयार्थ-जो **सिद्धखेत्त-वंदगो**-सिद्धक्षेत्रों की वंदना करने वाला **जिणगुणचिंतगो**-जिनेन्द्र भगवान् के गुणों का चिंतन करने वाला **सुधम्मसोदू**-सद्धर्म का श्रवण करने वाला **चेइयाणं ठावगो**-चैत्यादि (जिनमूर्ति आदि) को स्थापित कराने वाला और **पावादु**-पाप से **वि**-भी **विरत्तचित्तो**-विरक्त है चित्त जिसका **सो**-वह **हु**-निश्चय ही (पुण्यात्मा होता है)।

पुण्णप्पा सज्झाये, तव-धम्मज्झाण-पव्वेसु लीणो।
तण्हाभाव-विहीणो, परदव्व-णिरीहो होदि खलु।।100।।

अन्वयार्थ-**पुण्णप्पा**-पुण्यात्मा **खलु**-निश्चय ही **सज्झाये**-स्वाध्याय में **तव-धम्मज्झाण-पव्वेसु लीणो**-तप, धर्मध्यान और पर्वों में लीन **तण्हाभाव-विहीणो**-तृष्णाभाव से विहीन **परदव्वणिरीहो**- परद्रव्य से निरीह **होदि**-होता है।

सुगति का पात्र

को पावदि सुगदिं खलु, पावविरत्तप्पगुणधम्मजुत्तो।
अक्खविसयाण चागी, तुट्ठो विरत्तो गुरुसेवी।।101।।

अन्वयार्थ-**सुगदिं**-सुगति को **को**-कौन **पावदि**-प्राप्त करता है? **खलु**-निश्चय ही **पावविरत्तप्पगुण-धम्मजुत्तो**-पाप से विरक्त आत्मगुण से युक्त, धर्म से युक्त **अक्खविसयाण-चागी**-इन्द्रिय विषयों का त्यागी **तुट्ठो**-संतुष्ट **विरत्तो**-विरक्त और **गुरुसेवी**-गुरु की सेवा करने वाला (सद्गति को प्राप्त करता है)।

संलेहा-वय-धारो, जिद-मोह-कसाय-परिसहो भव्वो।
पावेदि सग्गदिं सो, अप्पगुणाणं तण्हालुओ।।102।।

अन्वयार्थ-संलेहा-वय-धारो-सल्लेखना व्रत को धारण करने वाला **जिदमोह-कसाय-परिसहो**-परीषह मोह तथा कषाय को जीतने वाला **अप्पगुणाणं तण्हालुओ**-आत्मगुण के लिए तृष्णावान् **सो**-वह **भव्वो**-भव्य **सग्गदिं**-सद्गति को **पावेदि**-पाता है।

पंडित कौन

को हु पंडिदो विस्से, सण्णाण-दया-जुदो सम्मदिट्ठी।
संजम-सहिदो धीरो, गुणगंभीरो णेह-जुत्तो।।103।।

अन्वयार्थ-विस्से-संसार में **हु**-निश्चय ही **को**-कौन **पंडिदो**- पण्डित है? **सम्मदिट्ठी**-सम्यग्दृष्टि **सण्णाण-दया-जुदो**-सम्यक् ज्ञान और दया से युक्त **संजमसहिदो**-संयम से युक्त **धीरो**-धीर **गुणगंभीरो**-गुणों में गंभीर और **णेह-जुत्तो**-स्नेह से सहित पण्डित होता है।

भारभूत कौन

को अत्थि भारभूदो, जिणसुद-मुणि-धम्मणिंदगो णिच्चं।
हिंसाइ-पावजुत्तो, तिव्व-मोह-संग-संलीणो।।104।।

अन्वयार्थ-भारभूदो-भारभूत **को**-कौन **अत्थि**-है **णिच्चं**-नित्य **जिणसुद-मुणिधम्मणिंदगो**-जिन निंदक, श्रुत की निंदा करने वाला, मुनिनिंदा करने वाला, धर्म का निंदक **हिंसाइ-पावजुत्तो**-हिंसादि पाँच पापों से युक्त **तिव्व-मोह-संग-संलीणो**-तीव्रमोह और परिग्रह में लीन (व्यक्ति भारभूत है)।

सारभूत कौन

को अत्थि सारभूदो, जिणगुरुवासगो धम्म-रक्खगो य।
जिणसासणस्स थंभो, वच्छल्ल-संजम-चाग-जुदो।।105।।

अन्वयार्थ-सारभूदो-सारभूत **को**-कौन **अत्थि**-है? **जिणगुरुवासगो**-जिनेन्द्र प्रभु का उपासक, गुरु का उपासक **धम्म-रक्खगो**-धर्म का संरक्षक **जिणसासणस्स थंभो**-जिनशासन का स्तम्भ **वच्छल्ल-संजम-चाग-जुदो य**-वात्सल्य, संयम और त्याग से युक्त (व्यक्ति सारभूत)।

महापापी मनुष्य

को होदि महापावी, सया जिणणिंदगो-धम्मगुरुहंतो।
गुणीणं दूसगो जो, रक्खगाणं भक्खगो सो हु।।106।।

अन्वयार्थ-महापावी-महापापी **को**-कौन **होदि**-होता है? **सय**-सदा **जो**-जो **जिणणिंदगो-धम्मगुरुहंतो**-जिनेन्द्र भगवान् की निंदा करने वाला, धर्म और गुरु का घात करने वाला **गुणीणं**-गुणियों में **दूसगो**-दोष लगाने वाला **रक्खगाणं भक्खगो**-रक्षकों के लिए भक्षक है **सो**-वह **हु**-ही (महापापी है)।

णिम्मल्लदव्वसेवी, सत्तवसणी गब्भघादगो होदि।
जो पिदराणं हंतो, सो हु णिम्मलजस-घादगो वि।।107।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिम्मल्लदव्व-सेवी**-निर्माल्य द्रव्य का सेवन करने वाला **सत्तवसणी**-सप्त व्यसनी **गब्भघादगो**-गर्भ का घात करने वाला **पिदराणं**-माता-पिता का **हंतो**-हनन करने वाला **णिम्मल-जसघादगो**-निर्मलयश का घातक है **हु**-निश्चय ही **सो**-वह **वि**-भी (महापापी) **होदि**-होता है।

नरकायु का बंधक

णिरयाउं को बंधदि, तिव्वकसाय-हिंसाइ-पवट्टगो।
पणक्खसंगासत्तो, धम्म-धम्मीणं णिंदगो य।।108।।

अन्वयार्थ-णिरयाउं-नरकायु **को**-कौन **बंधदि**-बाँधता है? **तिव्वकसाय-हिंसाइ-पवट्टगो**-तीव्र कषाय हिंसादि पापों के प्रवर्तक **पणक्खसंगासत्तो**-पाँच इन्द्रियों और परिग्रह में आसक्त **धम्म-धम्मीणं णिंदगो य**-धर्म और धर्मात्माओं का निंदक (नरकायु का बंध करते हैं)।

णिम्मल्ल-दव्वभक्खी, जिणायदण-धंसगुवसग्गकत्तू।
सत्तवसण-सेवी जो, सो बंधगो हु णिरयाउस्स।।109।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिम्मल्ल-दव्वभक्खी**-निर्माल्य द्रव्य का भक्षण करने वाला **जिणायदण-धंसगुवसग्गकत्तू**-जिनायतन का ध्वंसक, उपसर्ग कर्त्ता **सत्तवसण-सेवी**-सप्त व्यसन का सेवन करने वाला है **सो**-वह **हु**-ही **णिरयाउस्स**-नरक आयु का **बंधगो**-बंध करने वाला होता है।

मृत्यु नहीं हरती

किं णो लुट्टदि मिच्चू, सच्चं धम्मं विणयं जस-कित्तिं।
पुण्णं अप्पसहावं, सक्कार-संजम-तव-वदाणि।।110।।

अन्वयार्थ-मिच्चू-मृत्यु **किं**-क्या **णो**-नहीं **लुट्टदि**-छीनती है? **सच्चं धम्मं विणयं जस-कित्तिं**-सत्य, धर्म, विनय, यश, कीर्ति को **पुण्णं**-पुण्य को **अप्पसहावं**-आत्म स्वभाव को **सक्कार-संजम-तव-वदाणि**-संस्कार, संयम, तप और व्रतों को (नहीं छीनती है)।

धर्म-शाखा

का हु धम्म-तरु-साहा, खमा मद्दवज्जव-सोच-सच्चं च।
संजमो तवो चागो, आकिंचणं बंभचेरं च।।111।।

अन्वयार्थ-धम्म-तरु-साहा-धर्म रूपी वृक्ष की शाखा **का**-क्या- है? **हु**-निश्चय ही **खमा**-क्षमा **मद्दवज्जव-सोच-सच्चं**-मार्दव, आर्जव शौच, सत्य **संजमो**-संयम **तवो**-तप **चागो**-त्याग **आकिंचणं**-आकिंचन **च**-और **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य है।

तत्त्वचिंतन के स्तंभ

तच्चचिंतण-थंभा य, के हु जिणागम्मि लोग-सेयत्थं।
अणिच्चमसरणं भवो, एयत्तमण्णत्तमसुई य।।112।।

आसवसंवर-णिज्जर-लोय-सरूव-बोहि-दुल्लह-धम्मो।
अणुवेक्खा बेदहा य, णेया तच्चचिंतण-थंभा।।113।।

अन्वयार्थ-जिणागम्मि-जिनागम में **सया**-सदा **लोग-सेयत्थं**-लोक कल्याण के लिए **तच्चचिंतण-थंभा**-तत्त्वचिंतन के स्तम्भ **के**-क्या हैं **अणिच्चमसरणं भवो**-अनित्य, अशरण, संसार **य**-और **एयत्तमण्णत्तमसुई**-एकत्व, अन्यत्व, अशुचि भावना **य**-और **आसवसंवर-णिज्जर-लोय-सरूव-बोहि दुल्लह-धम्मो**-आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक स्वरूप, बोधि दुर्लभ व धर्म **बेदहा-अणुवेक्खा**-बारह-अनुप्रेक्षा **खलु**-निश्चय ही **तच्चचिंतण-थंभा**-तत्त्वचिंतन की स्तम्भ **णेया**-जानना चाहिए।

सम्यग्दर्शन के लक्षण

काणि लक्खणाणि होंति, सम्मदंसणस्स मोक्ख-कारणस्स।
पसम-संवेयभावो, अणुकंवा सरूवे णिट्ठा।।114।।

अन्वयार्थ-मोक्ख-कारणस्स-मोक्ष का कारण **सम्मदंसणस्स**- सम्यग्दर्शन के **काणि**-कौन से **लक्खणाणि**-लक्षण **होंति**-होते हैं? **पसम-संवेयभावो**-प्रशम भाव, संवेग भाव **अणुकंवा**-अनुकंपा और **सरूवे णिट्ठा**-स्वस्वरूप में निष्ठा अर्थात् आस्तिक्य ये सम्यग्दर्शन के लक्षण हैं।

जिणभत्ती गुरुसेवा, अप्पणिंदा धम्मीसु वच्छल्लं।
मित्ती परोवयारो, तित्थ-वंदणा धम्म-सवणं।।115।।

अन्वयार्थ-जिणभत्ती गुरुसेवा-जिनभक्ति, गुरु सेवा, **अप्पणिंदा**-आत्मनिंदा **धम्मीसु वच्छल्लं**-धर्मात्माओं में वात्सल्य **मित्ती परोवयारो**-मैत्री, परोपकार **धम्मसवणं**-धर्म श्रवण और **तित्थ वंदणा**-तीर्थ वंदना (ये भी सम्यग्दर्शन के लक्षण हैं)।

ज्ञान वृद्धि के हेतु

किं णाणवड्ढणस्स य, हेदू विणयो सुधम्म-धम्मीणं।
अप्पसहावम्मि रुई, जिणधम्मस्स पहावणा खलु।।116।।

अन्वयार्थ-णाणवड्ढणस्स-ज्ञान वर्धन के **हेदू**-कारण **किं**-क्या हैं **सुधम्म-धम्मीणं**-धर्म और धर्मात्माओं की **विणयो**-विनय **खलु**-निश्चय ही

अप्पसहावम्मि-आत्म स्वभाव में **रुई**-रुचि **य**-और **जिण-धम्मस्स**-जिनधर्म की **पहावणा**-प्रभावना (ज्ञानवर्धन के हेतु हैं)।

परमेट्ठीण वंदणा, णाणुवयरणाणि पडि सय सणेहो।
णाणस्स पयारो खलु, तिव्वणाण-तिसा अवि हेदू ।।117।।

अन्वयार्थ-सय-सदा **परमेट्ठीण**-परमेष्ठियों की **वंदणा**-वंदना **णाणुवयरणाणि**-ज्ञान के उपकरणों के प्रति **सणेहो**-स्नेह/वात्सल्य **णाणस्स पयारो**-ज्ञान का प्रचार **तिव्वणाण-तिसा**-तीव्र ज्ञान की तृष्णा **अवि**-भी **हेदू**-ज्ञानवर्धन के हेतु हैं।

अंतिम मंगलाचरण

णमो अरिह-सिद्धाणं, सूरि-पाठगाण साहु-धम्माणं।
चेइय-जिणालयाणं, तित्थखेत्ताण सग-सिद्धीइ।।118।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय ही **सगसिद्धीइ**-स्वसिद्धि के लिए **अरिह-सिद्धाणं**-अरिहंत और सिद्धों को **सूरि-पाठगाण-साहु-धम्माणं च**-आचार्य, उपाध्याय, साधु और धर्म को **चेइय-जिणालयाणं**-चैत्य, चैत्यालय को **तित्थखेत्ताण**-तीर्थक्षेत्रों को **णमो**-नमस्कार करता हूँ।

संति-पाय-जयकित्तिं, देसभूसणं विज्जाणंदं खलु।
सव्वा सेट्ठा-सूरी, तिजोगेहिं च णमामि सया।।119।।

अन्वयार्थ-और **संति-पाय-जयकित्तिं**-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर, अध्यात्म योगी आचार्य श्री पायसागर, महातपस्वी आचार्य श्री जयकीर्ति **देसभूषणं**-भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण **विज्जाणंदं**-सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द जी को **च**-और **सव्वा**-सर्व **सेट्ठा-सूरी**-श्रेष्ठ आचार्यों को **खलु**-निश्चय ही **सया**-सदा **तिजोगेहिं**-तीनों योगों से **णमामि**-प्रणाम करता हूँ।

प्रशस्ति

गुरु-पुण्णिमा-दिवसम्मि, वीरणिव्वाणम्मि पुण्णं होही।
रयण-पुरिसट्ठ-समिदी, जोगीणं सेणी भेयो य।।120।।

अन्वयार्थ-रयण-पुरिसट्ठ-समिदी-रत्नत्रय (3), पुरुषार्थ (4), समिति (5) **य**-और **जोगीणं सेणी भेयो**-योगियों के श्रेणी भेद (2) इस प्रकार 3452 किंतु 'अंकानां वामतो गतिः' से 2543 **वीरणिव्वाणम्मि**-वीर निर्वाण संवत् में **गुरु-पुण्णिमा-दिवसम्मि**- गुरु पूर्णिमा के दिवस में **पुण्णं**-(यह शास्त्र) पूर्ण **होही**-हुआ।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
6. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

1. Inspirational Tales Part-1 & 2
2. Meethe Pravachan Part-1

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दु:खदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-16
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना
8. सुसंस्कार वाटिका

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य जी)
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबालचंद्र जी)
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - अर्हत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति जी)
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37. सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)
38. विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय जी)

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. आचार्य श्री विद्यानंद जी की यम सल्लेखना (मुनि प्रज्ञानंद)
2. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
3. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
4. वसुनंदी प्रशनोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ विज्ञान सागर)
5. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
6. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
7. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
8. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
9. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
11. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
12. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
13. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
14. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज)